International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कौशाम्बी से प्राप्त रामोपासना के प्राचीनतम अभिलेख का सांस्कृतिक महत्व

डॉ0 अनिल कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, जलेसर

सारांश :

पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर राम अथवा रामकथा के सन्दर्भ गुप्तकाल से ही प्राप्त होते हैं। इन साक्ष्यों में श्रृंगेरपुर, नेवल, कौशाम्बी, श्रावस्ती, भिन्ड तथा पहाड़पुर इत्यादि स्थलों से प्राप्त अभिलेख प्रमुख हैं। कौशाम्बी से उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर अभिलेख में राम के देवत्व और उनकी स्वतन्त्र उपासना परम्परा का सन्दर्भ मिलता है। लेख प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण है। अभिलेख से ज्ञात होता है कि कौशाम्बी के गृहपति इन्द्रघोश ने अपनी पत्नी के साथ भगवान राम की उपासना की थी। शक संवत 81, 83 एवं 87 के अन्य अभिलेखों से इस अभिलेख की समकालीनता दिखाई देती है।

कुंजी शब्द :– दशरथ, राम, विष्णु, कांग–सेई–सुई, नागार्जुन कोंडा, श्रृंगवेरपुर, नेवल, श्रावस्ती, नचना कुठार, पहाड़पुर, इन्द्रघोष, भीमवर्मन।

शोध का उद्देश्य :

1. कौशाम्बी से प्राप्त प्रस्तर अभिलेख में राम की उपासना के विशय के सन्दर्भ का अध्ययन करना
2. कौशाम्बी से प्राप्त इस अभिलेख से रामकथा के साथ–साथ अन्य देवताओं के उल्लेखों का अध्ययन करना

प्रस्तावना :

रामकथा का प्रथम विस्तृत एवं सुव्यस्थित विवरण वाल्मीकीय रामायण में प्राप्त होता है। इसमें कई स्थलों पर राम को ईश्वर या विष्णु का अवतार माना गया है। परन्तु आदिकवि रचित उस महाकाव्य का तिथिक्रम विवाद रहित नहीं है। बौद्ध वाग्ड्मय में रामकथा का विवरण दशरथ जातक में प्राप्त होता है। दशरथ जातक रामायण का उपजीव्य था अथवा रामायण के आधार पर दशरथ जातक की रचना हुई, यह स्वंय विवादग्रस्त है, पुनश्च जातक परम्पराएं अनेक शताब्दियों तक मौखिक रूप से चलती रहीं। उनका संकलन पांचवीं शती ई0 तक होता रहा। राम का विष्णु के अवतार के रूप में परिगणन महाभारत तथा पुराणों में अनेकशः प्राप्त होता है। राम कथानक प्राचीन होते हुए भी राम के देवतत्व–सम्बन्धी अवधारणा को विद्वानों ने गुप्तकाल के पहले स्वीकार नहीं किया है। इस सन्दर्भ में अनामक जातक तथा दशरथ कथानक आख्यानों की विवेचना अप्रासंगिक नहीं होगी। अनामक जातक में राम बनवास, सीताहरण, जटायु–वृत्तान्त, बन्दरों द्वारा सीता की खोज तथा सीता के द्वारा सतीत्व की परीक्षा देना इत्यादि का विवरण प्राप्त होता है। यह उल्लेखनीय है कि इस जातक का अनुवाद तीसरी शती ईसवी में कांग–सेई–सुई द्वारा चीनी भाषा में किया जा चुका था। दशरथ कथानक की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भी रचना चौथी शती ईसवी तक अवश्य हो चुकी थी, क्योंकि एक सौ इक्कीस अवदानों के चीनी संग्रह त्सा–पौ–त्संग किंग में दशरथ भी संकलित है और यह संग्रह चार सो बहत्तर ईसवी में चीनी भाषा में अनूदित हो चुका था। इसमें राम को स्पष्ट रूप से नारायणीय शक्ति से सम्बन्धित स्वीकार किया गया है। कालिदास ने भी राम को स्पष्ट रूप से विष्णु का अवतार कहा है।

पुरातात्विक साक्ष्यों में गुप्तकाल के पहले राम अथवा रामकथा से सम्बन्धित दृश्यों का अंकन अत्यल्प है। केवल नागार्जुनी कोण्डा से एक ऐसा शिलाफलक मिला है। जिस पर राम हनुमान की पीठ पर बैठे प्रदर्शित हैं। परन्तु गुप्तकालीन अनेक अवशेश श्रृंगवेरपुर, नेवल, कौशाम्बी, श्रावस्ती, भिन्ड, नचना–कुठार, अफसढ़, पहाड़पुर आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। इतने विस्तृत क्षेत्र में परिव्याप्त इन अवशेषों से यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि न केवल रामकथा अपितु राम के देवत्त की भी प्रतिष्ठा गुप्तकाल के पहले ही हो चुकी थी। गढ़वा (इलाहाबाद) से प्राप्त चार सौ सरसठ ईसवी के एक लेख में चित्रकूट स्वामी को उपासना का उल्लेख मिलता है। चित्रकूट स्थान से राम की अतिशय सम्बद्धता के कारण यह कहा जा सकता है कि यहां पर चित्रकूट स्वामी से तात्पर्य भगवान राम से ही है।

अभी हाल में ही कौशाम्बी से एक प्रस्तर अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिससे राम के देवत्व और उनकी स्वतंत्र उपासना परम्परा पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। यह अभिलेख चौकोर प्रस्तर फलक पर उत्कीर्ण है। लम्बी अवधि तक यमुना के तटवर्ती कीचड़ में धंसें रहने के कारण यह अभिलेख अनेक स्थलों से टूटा हुआ है तथा इसके अनेक अक्षर भी मिट गये हैं। अवशिष्ट अक्षरों का सहज वाचन किया जा सकता है। लेख का पाठ इस प्रकार है –

1. दिवसे 10 + 2 गहपति
2. सह दारकेन इद्धघोशेन
3. .....भगवतो रामनारायन

लेख प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण है। गृहपति के स्थान पर गहपति, इन्द्रघोष के स्थान पर इद्धघोष स्पष्टतः प्राकृत के परिचायक हैं। यदि इस अभिलेख के अक्षरों की तुलना भद्रमघ के शक संवत् 81, 83 एवं 87 के अन्य अभिलेखों से करें तो इनमें पर्याप्त साम्य दृष्टिगत होता है।, उल्लेखनीय है कि ये अभिलेख भी कौशाम्बी से प्राप्त हुए हैं। भारतवर्ष में वर्ष, मास और दिवस के साथ अभिलेखों के लेखन की परम्परा मुख्यतः कुषाणों के समय से विकसित हुई। दूसरी ओर कौशाम्बी से ही प्राप्त भीमवर्मन के शक संवत् 122 और 139 के मध्य उत्कीर्ण अभिलेखों में मात्राओं की संरचना अधिक विकसित ज्ञात होती है। अतः यह सहज अनुमान किया जा सकता है कि कौशाम्बी से प्राप्त राम नारायण के देवत्त एवं उपासना से सम्बन्धित यह लेख दूसरी शती ईसवी में किसी समय उत्कीर्ण किया गया होगा।

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि कौशाम्बी के गृहपति इन्द्रघोष ने अपनी पत्नी के साथ द्वादशी तिथि को भगवान राम की उपासना की थी। संभव है कि उसने प्रतिमा भी प्रतिष्ठापित की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-
Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हो। यह अभिलेख कई दृष्टियों से विचारणीय है। गृहपति का तात्पर्य परिवार के मुखिया तथा धनी श्रेष्ठ से है। कौशाम्बी में श्रेष्ठिजनों के द्वारा बौद्धधर्म से सम्बन्धित निर्माण कार्य के प्रमाण उपलब्ध है। यथा घोषित नामक श्रेष्ठि ने घोषिताराम विहार का निर्माण कराया था। वैष्णव धर्म से सम्बन्धित निर्माण कार्य का यह प्रथम अभिलेखीय प्रमाण है। यह उल्लेखनीय है कि वासुदेव–कृष्ण की उपासना से सम्बन्धित पुरातात्विक प्रमाण मल्हार (मध्य प्रदेश), घोसण्डी (राजस्थान) इत्यादि से दूसरी शताब्दी ईसवी पूर्व से ही प्राप्त होने लगते हैं। कौशाम्बी में भी वासुदेवोपासना के प्रमाण रूप में ताड़पत्रशीर्ष तथा जेठोमन्त्र के अभिलेख का उल्लेख किया जा सकता है। परन्तु राम से सम्बन्धित पुरातात्विक साक्ष्य इतने प्राचीन अभी तक उपलब्ध नहीं हुए है।

अभिलेख में उत्कीर्ण दिवसे 12 भी महत्वपूर्ण है। द्वादशी तिथि विष्णु की उपासना के लिए अतिशय पुण्यप्रदा मानी गयी है। मत्स्यपुराण में एकादशी को निराहार रहकर दूसरे दिन अर्थात् द्वादशी को विष्णु और लक्ष्मी की उपासना का विधान प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष :

इस अभिलेख में राम के साथ 'नारायण' शब्द भी विवेच्य है। 'नारायण' शब्द मूल रूप में ब्रह्मा के साथ सम्बद्ध था। मैत्रायणी संहिता में पहली बार इसका उल्लेख विष्णु के साथ मिलता है। महानारायणयोपनिश्षद, जो तीसरी शती ई0पू0 की रचना है, में 'नारायण' का उल्लेख विष्णु के रूप में हुआ है। पुराणों में राम और कृष्ण दोनों को विष्णु योद्धा नारायण का अवतार कहा गया है, परन्तु 'नारायण' शब्द का प्रयोग भगवान वासुदेव के साथ अधिकता से मिलता है। मत्स्यपुराण में दाशरथि राम और उनके भाइयों को नारायणत्मक अर्थात् नारायण का अंश कहा गया है। अतः राम के साथ नारायण उपाधि के उल्लेख एवं रामोपासना का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य होने के कारण इसका विशेष महत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. उदयनारायण राय, प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन, उ0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, इलाहाबाद, पृ0 119
2. अंगनेलाल, उत्तर प्रदेश के बौद्ध केन्द्र, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखन, पृ0 86
3. गोवर्धन राय शर्मा, दि एक्सकेशन्स ऐट कौशाम्बी 1957–59, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 226
4. एन0एन0 घोश, अर्ली हिस्ट्री ऑफ कौशाम्बी, पृ0 46
5. सुबोध कुमार जैन, कौशाम्बी का इतिहास, पृ0 129